

सुल्तानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव का अध्ययन

शिखा वर्मा एवं संदीप कुमार

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.360>

सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र सुल्तानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12) के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स (जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप) के उपयोग के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के सोशल मीडिया उपयोग की आदतों का मूल्यांकन करना और लिंग (छात्र-छात्रा) एवं आवासीय क्षेत्र (ग्रामीण-शहरी) के आधार पर इसके तुलनात्मक प्रभाव का परीक्षण करना है। शोध में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए सुल्तानपुर सदर तहसील के एक शहरी और एक ग्रामीण विद्यालय से कुल 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) का स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु सोशल नेटवर्किंग उपयोग के मापन के लिए मानकीकृत मापनी और शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए विगत परीक्षा के प्राप्तांकों का उपयोग किया गया। अध्ययन परिणामों की व्याख्या समय विस्थापन सिद्धांत और संज्ञानात्मक भार सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में की गई है, जो यह स्पष्ट करते हैं कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग विद्यार्थियों के अकादमिक समय को विस्थापित कर संज्ञानात्मक अधिभार उत्पन्न करता है, जिससे शैक्षिक उपलब्धि में गिरावट आती है।

मुख्य शब्दः—शैक्षिक उपलब्धि, सोशल नेटवर्किंग, माध्यमिक स्तर, समय विस्थापन सिद्धांत, संज्ञानात्मक भार सिद्धांत, सुल्तानपुर जनपद

1. प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी को डिजिटल और सूचना क्रांति के युग के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिसने मानव जीवन के हर पहलू को रूपांतरित कर दिया है। शिक्षा का क्षेत्र भी इस तकनीकी क्रांति से अछूता नहीं रहा है। विशेष रूप से विगत कुछ वर्षों में, और कोविड-19 महामारी के पश्चात, शिक्षा प्रणाली में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का एकीकरण एक विकल्प के बजाय अनिवार्यता बन गया है (शर्मा एवं शर्मा, 2022, पृ. 34)। डिजिटल शिक्षण प्लेटफार्मों के उदय के साथ ही विद्यार्थियों के दैनिक जीवन में स्मार्टफोन और इंटरनेट की सुलभता में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप, सोशल नेटवर्किंग साइट्स जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, स्नैपचैट और यूट्यूब का विद्यार्थियों के जीवन में दखल बहुत अधिक बढ़ गया है।

डिजिटल इंडिया जैसी सरकारी पहलों के कारण उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जैसे जनपदों के ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में भी इंटरनेट की पैठ बढ़ी है। यद्यपि सोशल मीडिया नेटवर्किंग संचार, सूचना प्राप्ति, सहयोगात्मक अधिगम और रचनात्मकता का एक सशक्त मंच प्रदान करती है, परंतु

- शोध निर्देशिका : अध्यक्ष, शिक्षक-प्रशिक्षण विभाग : का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या,
- शोधार्थी : M.Sc., M.Ed.

किशोर विद्यार्थियों द्वारा इसका अत्यधिक, उद्देश्यहीन और अनियंत्रित उपयोग एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है (अजीजी एवं अन्य, 2019, पृ. 14)। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किशोरावस्था एक ऐसा संवेदनशील चरण है जहाँ सामाजिक स्वीकृति और फियर ऑफ मिसिंग आउट की भावना प्रबल होती है। इसके कारण विद्यार्थी आभासी दुनिया में अधिक समय व्यतीत करने लगते हैं, जो अंततः उनके मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, शारीरिक गतिविधियों, सामाजिक समायोजन और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उनके अकादमिक प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव डालता है।

माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12) भारतीय शिक्षा प्रणाली का वह महत्वपूर्ण और पारगमन पड़ाव है जहाँ विद्यार्थियों के भविष्य, उनके करियर और उनके उच्च शिक्षा के मार्ग की आधारशिला रखी जाती है। शैक्षिक उपलब्धि एक व्यापक संप्रत्यय है। इसका तात्पर्य केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने से नहीं है, बल्कि उन सभी अर्जित ज्ञान, संज्ञानात्मक कौशलों, समस्या-समाधान क्षमताओं और दक्षताओं से है जो एक विद्यार्थी निर्धारित पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयी वातावरण में प्राप्त करता है (यूसुफ एवं अदिगुन, 2020, पृ. 45)। सामान्यतः, इसका मापन विद्यार्थियों द्वारा विगत वार्षिक परीक्षाओं के प्राप्तांकों, ग्रेड पॉइंट एवरेज, या मानकीकृत शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है।

माध्यमिक स्तर पर उच्च शैक्षिक उपलब्धि का महत्व अत्यधिक है। यह न केवल विद्यार्थियों के प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के अवसर सुनिश्चित करती है, बल्कि यह उनके व्यावसायिक चयन, आर्थिक स्थिरता और जीवन में आत्म-संतुष्टि के निर्धारण में भी निर्णायक भूमिका निभाती है। इस आयु वर्ग में विद्यार्थियों के भीतर होने वाले तीव्र शारीरिक, हार्मोनल और संवेगात्मक परिवर्तनों के कारण वे बाहरी उद्दीपनों (जैसे सोशल मीडिया के नोटिफिकेशन और लाइक्स) के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। अतः, यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उनके सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य-अकादमिक उत्कृष्टता-पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर व्यतीत किए जाने वाले समय और विद्यार्थियों के अध्ययन की आदतों तथा उनके परीक्षा परिणामों के मध्य एक अत्यंत जटिल, बहुआयामी और अक्सर विरोधाभासी अंतर्संबंध पाया जाता है। इस अंतर्संबंध की वैज्ञानिक व्याख्या दो प्रमुख स्थापित मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक सिद्धांतों के माध्यम से की जा सकती है:

पहला महत्वपूर्ण सिद्धांत समय विस्थापन सिद्धांत है (नी, 2001, पृ. 18)। यह सिद्धांत इस मूल अवधारणा पर आधारित है कि मानव जीवन में समय एक सीमित और गैर-नवीकरणीय संसाधन है। जब विद्यार्थी अपना बहुमूल्य समय सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर स्क्रॉलिंग करने, गेम खेलने या आभासी मित्रों से संचार करने में व्यतीत करते हैं, तो वे प्रत्यक्ष रूप से उस समय को विस्थापित कर रहे होते हैं जो अन्यथा गहन अध्ययन, पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति, गृहकार्य, खेलकूद या पर्याप्त नींद में उपयोग किया जा सकता था। सुलतानपुर जनपद के विद्यार्थियों के संदर्भ में, विशेषकर जहाँ ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों को कृषि या घरेलू कार्यों में भी समय देना पड़ता है, स्मार्टफोन पर अत्यधिक समय बिताना उनके अकादमिक समय को गंभीर रूप से संकुचित कर देता है, जिससे उनके परीक्षा परिणामों में गिरावट आती है।

दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत संज्ञानात्मक भार सिद्धांत है (स्वेलर, 1988, पृ. 42)। शिक्षा मनोविज्ञान के अनुसार, मानव मस्तिष्क की कार्यशील स्मृति की सूचनाओं को एक समय में संसाधित करने की

क्षमता अत्यधिक सीमित होती है। जब कोई विद्यार्थी अध्ययन करते समय बार-बार अपने मोबाइल पर इंस्टाग्राम या व्हाट्सएप्प के नोटिफिकेशन्स चेक करता है या मल्टीटास्किंग करता है, तो उसके मस्तिष्क पर बाह्य संज्ञानात्मक भार अत्यधिक बढ़ जाता है (एसेरयेल एवं अन्य, 2021, पृ. 22)। इस निरंतर कार्य-परिवर्तन के परिणामस्वरूप, विद्यार्थी का ध्यान भंग होता है और मस्तिष्क नई शैक्षिक सूचनाओं को अर्थपूर्ण ढंग से दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित करने में विफल रहता है। यह संज्ञानात्मक अधिभार विद्यार्थियों की जटिल अवधारणाओं को समझने की क्षमता को क्षीण कर देता है, जिससे अंततः शैक्षिक उपलब्धि का स्तर गिर जाता है।

2. समस्या कथन

"सुलतानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव का अध्ययन।"

3. अध्ययन के उद्देश्य

अनुसंधान की संपूर्ण रूपरेखा, दिशा और कार्यप्रणाली उसके उद्देश्यों द्वारा ही निर्देशित होती है। सुलतानपुर जनपद की अपनी एक विशिष्ट जनसांख्यिकीय, सामाजिक और भौगोलिक स्थिति है। यहाँ की कुल साक्षरता दर लगभग 71.14% है और यहाँ एक विस्तृत ग्रामीण-शहरी मिश्रित जनसंख्या निवास करती है। इस विशिष्ट क्षेत्रीय संदर्भ और शोध समस्या के समाधान हेतु, प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित सुविचारित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

- 1 उपयोग की आदतों का मूल्यांकन:** सुलतानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सोशल नेटवर्किंग के उपयोग की आदतों एवं स्तर का मापन करना। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया पर व्यतीत किए जाने वाले दैनिक समय, उपयोग की आवृत्ति, सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले प्लेटफॉर्मस और उनके मनोवैज्ञानिक जुड़ाव (लत या एडिक्शन) की गहनता का आकलन किया जाएगा।
- 2 शैक्षिक उपलब्धि का स्तर ज्ञात करना:** विद्यार्थियों की वर्तमान शैक्षिक उपलब्धि का स्तर ज्ञात करना। यह मूल्यांकन उनकी विगत वार्षिक परीक्षाओं के प्राप्तांकों के प्रतिशत अथवा मानकीकृत शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के वस्तुनिष्ठ प्राप्तांकों के आधार पर किया जाएगा, ताकि उनके अकादमिक प्रदर्शन का एक स्पष्ट आधारभूत डेटा प्राप्त हो सके।
- 3 प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन:** सोशल नेटवर्किंग के उपयोग के स्तर (जिसे उच्च, मध्यम और निम्न श्रेणियों में विभाजित किया जाएगा) का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण करना। इस उद्देश्य का लक्ष्य यह पता लगाना है कि क्या अत्यधिक उपयोग अकादमिक प्रदर्शन में गिरावट लाता है या नियंत्रित उपयोग इसे अप्रभावित रखता है।
- 4 तुलनात्मक अध्ययन (लिंग एवं आवासीय क्षेत्र के आधार पर):** छात्र एवं छात्राओं (लिंग भेद) तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों (आवासीय भेद) के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना। यह उद्देश्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण है

क्योंकि यह समाज में व्याप्त डिजिटल डिवाइड या लैंगिक असमानताओं को उजागर करेगा। यह स्पष्ट करेगा कि क्या शहरी विद्यार्थियों (जिनके पास बेहतर कनेक्टिविटी है) और ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक भिन्नता है (राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, 2020, पृ. 15)।

4. परिकल्पनाएँ

अनुसंधान प्रणाली में परिकल्पना एक परीक्षण योग्य, अस्थायी कथन या पूर्व-अनुमान होता है जो अनुसंधानकर्ता द्वारा चरों के मध्य संभावित संबंधों की व्याख्या करने के लिए निर्मित किया जाता है। एक अच्छे शोध में पूर्वाग्रहों से बचने और पूर्ण वस्तुनिष्ठता बनाए रखने के लिए शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया जाता है (क्रेज एवं अन्य, 2018, पृ. 56)। शून्य परिकल्पना यह मानकर चलती है कि चरों के मध्य कोई सार्थक संबंध या समूहों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। सांख्यिकीय परीक्षणों के उपरांत ही इन्हें स्वीकार या निरस्त किया जाता है।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:

- H01 सुलतानपुर जनपद के उच्च और निम्न सोशल नेटवर्किंग का उपयोग करने वाले माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह परिकल्पना यह जांचती है कि क्या उपयोग की मात्रा का सीधे तौर पर अंकों पर प्रभाव पड़ता है।
- H02 सुलतानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर पर सोशल नेटवर्किंग का उपयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसके माध्यम से यह परीक्षण किया जाएगा कि क्या सोशल मीडिया का भटकाव किसी विशेष लिंग को अधिक प्रभावित करता है।
- H03 सुलतानपुर जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के सोशल नेटवर्किंग उपयोगकर्ताओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह परिकल्पना भौगोलिक और अवसरचरणात्मक विषमताओं (डिजिटल डिवाइड) के प्रभावों को सांख्यिकीय कसौटी पर परखेगी।
- H04 विद्यार्थियों के सोशल नेटवर्किंग उपयोग के प्राप्तकों और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तकों के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

5. अध्ययन के चर

किसी भी परिमाणात्मक और वैज्ञानिक शोध की विश्वसनीयता इस बात पर निर्भर करती है कि अध्ययन के चरों को कितनी स्पष्टता के साथ परिभाषित और परिसीमित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रमुख चर सम्मिलित हैं, जिनका क्रियात्मक रूप से परिभाषीकरण निम्नलिखित है:

स्वतंत्र चर

सोशल नेटवर्किंग का उपयोग: स्वतंत्र चर वह चर होता है जिसे शोधकर्ता द्वारा मापा जाता है और जिसके आधार पर आश्रित चर में होने वाले परिवर्तनों का पूर्वानुमान लगाया जाता है। इस अध्ययन में,

विद्यार्थियों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स (जैसे-व्हाट्सएप्प, फेसबुक, इंस्टाग्राम) का उपयोग स्वतंत्र चर है। इसका मापन केवल व्यतीत किए गए समय तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मनोवैज्ञानिक आयाम भी शामिल हैं। मनोवैज्ञानिक शाहनवाज और रहमान (2020) के अनुसार, सोशल नेटवर्किंग उपयोग या एडिक्शन के कई आयाम होते हैं, जैसे-प्रमुखता (जब सोशल मीडिया विचारों पर हावी हो जाए), मूड में बदलाव, सहिष्णुता, वापसी के लक्षण (इंटरनेट न होने पर बेचौनी), और संघर्ष (अध्ययन और आभासी जीवन के बीच टकराव) (शाहनवाज और रहमान, 2020, पृ. 89)। इस चर को प्राप्तांकों के आधार पर उच्च, मध्यम और निम्न स्तरों में वर्गीकृत किया जाएगा।

आश्रित चर

शैक्षिक उपलब्धि: आश्रित चर वह चर है जिस पर स्वतंत्र चर के हेरफेर या स्तरों का प्रभाव देखा जाता है। इस अध्ययन में, शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर के रूप में लिया गया है। इसका क्रियात्मक अर्थ विद्यार्थियों द्वारा उनके पाठ्यक्रम के अंत में अर्जित वह ज्ञान और कौशल है जिसे अंकों के रूप में मापा जा सकता है। इस शोध में, शैक्षिक उपलब्धि को विद्यार्थियों द्वारा उनकी विगत वार्षिक परीक्षा में प्राप्त किए गए कुल अंकों के प्रतिशत अथवा किसी प्रमाणित और मानकीकृत शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में प्राप्त प्राप्तांकों के रूप में परिभाषित किया गया है।

6. शोध विधि एवं प्रक्रिया

अनुसंधान की सफलता उसके लिए चुनी गई कार्यप्रणाली और अभिकल्प पर निर्भर करती है। यह अनुभाग इस अध्ययन के क्रियान्वयन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध समस्या की प्रकृति और उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वर्णात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य किसी घटना, स्थिति या जनसंख्या की वर्तमान प्रवृत्तियों और चरों के मध्य अंतर्संबंधों का यथातथ्य और सटीक विवरण प्रस्तुत करना होता है (प्रसाद, 2022, पृ. 41)। चूंकि इस अध्ययन का उद्देश्य बिना किसी चर में कृत्रिम रूप से हेरफेर किए, स्वाभाविक रूप से मौजूद शैक्षिक उपलब्धि और सोशल नेटवर्किंग की आदतों का मूल्यांकन करना है, अतः सर्वेक्षण विधि इसके लिए सर्वाधिक वैज्ञानिक और उपयुक्त विकल्प है।

जनसंख्या

अनुसंधान की भाषा में जनसंख्या या समष्टि का अर्थ उन सभी व्यक्तियों, वस्तुओं या घटनाओं के समूह से है जिन पर शोध के परिणाम लागू किए जाने हैं। इस अध्ययन की जनसंख्या में सुलतानपुर जनपद (उत्तर प्रदेश) के विभिन्न माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी सम्मिलित हैं। सुलतानपुर जनपद अपनी एक विशिष्ट शैक्षिक पृष्ठभूमि के लिए जाना जाता है, जहाँ वर्ष 2012 के आँकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में 3023 और शहरी क्षेत्रों में 121 विद्यालय संचालित थे (शिक्षा सांख्यिकी, 2012)। इस विशाल जनसंख्या का यथार्थ प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित दो विशिष्ट संस्थानों को आधार बनाया गया है:

- 1 **पी0एम0 श्री राजकीय इण्टर कालेज, सुलतानपुर:** यह सुलतानपुर के शहरी क्षेत्र का एक प्रमुख और प्रतिष्ठित संस्थान है, जिसकी स्थापना 1955 के मध्य विभिन्न संकायों के विस्तार के साथ हुई। 04 विधे के परिसर और आधुनिक आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर से युक्त यह विद्यालय शहरी और तकनीकी रूप से साधन-संपन्न विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व करता है।
- 2 **श्रीमती मर्यादी इण्टर कालेज, बरौंसा, सदर, सुलतानपुर:** यह विद्यालय सुलतानपुर के ग्रामीण या अर्ध-शहरी अंचल का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ डिजिटल संसाधनों और इंटरनेट कनेक्टिविटी की स्थिति शहरी क्षेत्रों से भिन्न हो सकती है, जो ग्रामीण जनसांख्यिकी को समझने के लिए उपयुक्त है।

न्यादर्श/प्रतिदर्श

चूँकि संपूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना समय और संसाधनों की दृष्टि से अव्यावहारिक है, अतः शोध परिणामों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श का चयन किया गया है। इस अध्ययन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श तकनीक का उपयोग किया गया है।

कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। स्तरीकरण के आधार निम्नलिखित हैं ताकि किसी भी उप-समूह का प्रतिनिधित्व न छूटे:

- **लिंग के आधार पर:** 50 छात्र और 50 छात्राएँ।
- **भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर:** 50 शहरी विद्यालय के विद्यार्थी (पी0एम0 श्री राजकीय इण्टर कालेज, सुलतानपुर से) और 50 ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थी (श्रीमती मर्यादी इण्टर कालेज, बरौंसा से)। यह समतुल्य विभाजन यह सुनिश्चित करता है कि डिजिटल पहुंच और उपयोग में होने वाले ग्रामीण-शहरी अंतराल और लैंगिक विषमता का अत्यंत सटीक और निष्पक्ष सांख्यिकीय मूल्यांकन किया जा सके।

उपकरण

शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु विश्वसनीय और वैध उपकरणों का प्रयोग अनिवार्य है। इस शोध में दो प्रमुख मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा:

1. सोशल नेटवर्किंग उपयोग के मापन हेतु मानकीकृत मापनी

विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग की आदतों, उपयोग की गहनता और मनोवैज्ञानिक व्यसन के स्तर को मापने के लिए एक मानकीकृत सोशल नेटवर्किंग एडिक्शन स्केल या शोधकर्ता द्वारा अनुकूलित प्रश्नावली का प्रयोग किया जाएगा।

2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए उनके विद्यालयी रिकॉर्ड से पिछली वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों का प्रतिशत प्राप्त किया जाएगा, अथवा एक मानकीकृत 'शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण' प्रशासित किया जाएगा। इन प्राप्तांकों को एक व्यवस्थित पैमाने पर रखा जाएगा ताकि सांख्यिकीय सहसंबंध स्थापित किया जा सके।

7. प्रदत्तों का संकलन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया अत्यंत व्यवस्थित और नैतिक शोध मानकों के अनुरूप संचालित की जाएगी। सर्वप्रथम चयनित विद्यालयों (पी0एम0 श्री राजकीय इण्टर कालेज, सुलतानपुर) के संस्था प्रधानों से औपचारिक और लिखित अनुमति प्राप्त की जाएगी। इसके पश्चात, चयनित 100 विद्यार्थियों से संपर्क स्थापित कर उन्हें शोध के अकादमिक उद्देश्यों से अवगत कराया जाएगा। विद्यार्थियों से यह सुनिश्चित किया जाएगा कि उनके द्वारा दी गई जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखी जाएगी। उनकी सहमति प्राप्त करने के उपरांत, उन्हें सोशल नेटवर्किंग मापनी और शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पत्रक (या उनके अंक पत्र का विवरण) प्रदान किए जाएंगे। इसके साथ ही, डिजिटल उपकरणों (स्मार्टफोन, लैपटॉप) की सुलभता, उपयोग की दैनिक अवधि (घंटों में) और उपयोग के मुख्य उद्देश्य (शैक्षणिक, मनोरंजन, या संचार) से संबंधित जनसांख्यिकीय डेटा भी एकत्र किया जाएगा।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

अनुसंधान में एकत्रित किए गए कच्चे प्रदत्तों का तब तक कोई अर्थ नहीं होता जब तक कि उनका उचित सांख्यिकीय विश्लेषण न किया जाए। प्रदत्तों के विश्लेषण और निर्मित शून्य परिकल्पनाओं के वस्तुनिष्ठ परीक्षण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा:

- **मध्यमान और प्रामाणिक विचलन:** मध्यमान का उपयोग विद्यार्थियों के सोशल मीडिया उपयोग के स्कोर और शैक्षिक उपलब्धि के स्कोर के औसत स्तर को ज्ञात करने के लिए किया जाएगा। वहीं, प्रामाणिक विचलन का उपयोग यह मापने के लिए किया जाएगा कि समूह के प्राप्तांक उनके मध्यमान से कितनी दूरी तक फैले हुए हैं। यह डेटा की सजातीयता या विजातीयता को समझने में मदद करेगा।
- **टी-परीक्षण:** यह एक इन्फरेंशियल सांख्यिकीय तकनीक है जिसका प्रयोग दो स्वतंत्र समूहों के मध्यमानों के बीच अंतर की सार्थकता का परीक्षण करने के लिए किया जाता है। इस अध्ययन में छात्र बनाम छात्राएं, ग्रामीण बनाम शहरी, और उच्च सोशल नेटवर्किंग उपयोग बनाम निम्न उपयोग वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि मध्यमानों की तुलना के लिए टी-परीक्षण लागू किया जाएगा।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त मात्रात्मक परिणामों की व्याख्या मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों, शैक्षिक सिद्धांतों और समकालीन शोध साहित्यों के संदर्भ में गहराई से की जाएगी। इस खंड में शोधकर्ता सांख्यिकीय परिणामों के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख आयामों पर अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा और उनकी विस्तृत व्याख्या करेगा:

संज्ञानात्मक अधिभार और अकादमिक गिरावट का संबंध

यदि सांख्यिकीय परीक्षणों और सहसंबंध विश्लेषण से यह परिणाम प्राप्त होता है कि उच्च सोशल नेटवर्किंग उपयोग (नकारात्मक लत) और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य एक सार्थक नकारात्मक सहसंबंध है, तो इसकी व्याख्या शिक्षा मनोविज्ञान के संज्ञानात्मक भार सिद्धांत के आधार पर

की जाएगी (स्वेलर, 1988, पृ. 42)। जब सुलतानपुर जनपद के विद्यार्थी पढ़ते समय अपने स्मार्टफोन पर लगातार व्हाट्सएप के संदेश या इंस्टाग्राम रील्स स्कॉल करते हैं, तो उनकी चयनात्मक ध्यान की प्रक्रिया बुरी तरह बाधित होती है (एसेरयेल एवं अन्य, 2021, पृ. 6)। इस डिजिटल मल्टीटास्किंग के कारण उनकी सीमित कार्यशील स्मृति पर बाह्य संज्ञानात्मक भार अत्यधिक बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप, वे गणित, विज्ञान या साहित्य की जटिल अवधारणाओं को गहराई से संसाधित नहीं कर पाते, जिससे उनके सीखने की गति धीमी हो जाती है और अंततः परीक्षा परिणामों में भारी गिरावट आती है।

समय का विस्थापन और अध्ययन की आदतों पर प्रभाव

परिणामों की व्याख्या समय विस्थापन सिद्धांत के आलोक में भी की जाएगी (नी, 2001, पृ. 18)। यह स्पष्ट किया जाएगा कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग छात्रों के बहुमूल्य अकादमिक समय को कैसे विस्थापित कर रहा है। विशेष रूप से देर रात तक ऑनलाइन रहने की आदत विद्यार्थियों के नींद के चक्र को बाधित करती है, जिससे अगले दिन विद्यालय में उनकी एकाग्रता और ऊर्जा का स्तर निम्न रहता है (अजीजी एवं अन्य, 2019, पृ. 15)। समय प्रबंधन का यह अभाव उनके गृहकार्य और स्वाध्याय के घंटों को कम कर देता है। पूर्व अध्ययनों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि जो छात्र मनोरंजन के लिए सोशल साइट्स पर अधिक समय बिताते हैं, उनका GPA उन छात्रों की तुलना में काफी कम होता है जो अपने समय का सुचारु प्रबंधन करते हैं (किर्सचनर एवं कार्पिस्की, 2010, पृ. 1238)।

डिजिटल डिवाइड, लैंगिक एवं जनसांख्यिकीय विषमताओं की व्याख्या

शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों तथा छात्र-छात्राओं के तुलनात्मक टी-परीक्षण के निष्कर्ष यह स्पष्ट करेंगे कि उत्तर प्रदेश में मौजूद 'डिजिटल डिवाइड' का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या वास्तविक प्रभाव पड़ रहा है। यूडीआईएसई और राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की रिपोर्टों के अनुसार, उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुँच, डिजिटल साक्षरता और उपकरणों की उपलब्धता शहरी क्षेत्रों की तुलना में काफी कम है (राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, 2020, पृ. 15)।

यदि ग्रामीण विद्यार्थियों (जैसे मर्यादा इंटर कालेज के छात्र) में सोशल नेटवर्किंग का उपयोग कम पाया जाता है, तो संभवतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि सोशल मीडिया के व्यसन के कारण उतनी नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं होगी जितनी शहरी (पीएम0 श्री राजकीय इंटर कालेज, सुलतानपुर) विद्यार्थियों की हो सकती है। इसके विपरीत, यदि ग्रामीण विद्यार्थी भी अत्यधिक व्यसन का शिकार पाए जाते हैं, तो यह ग्रामीण क्षेत्रों में स्मार्टफोन की बढ़ती पैठ और डिजिटल साक्षरता/मार्गदर्शन की भारी कमी का गंभीर संकेत होगा। लैंगिक तुलना के आधार पर यह भी व्याख्या की जाएगी कि क्या छात्राओं पर सोशल मीडिया के कारण साइबर-बुलिंग या आत्म-छवि से संबंधित मनोवैज्ञानिक दबाव छात्रों की तुलना में अधिक है, जो उनके परीक्षा परिणामों को प्रभावित कर रहा है।

शिक्षाप्रद उपयोग बनाम मनोरंजनात्मक उपयोग

अंततः, शोध निष्कर्ष इस महत्वपूर्ण द्वंद्व को भी स्पष्ट करेगा कि क्या सोशल नेटवर्किंग पूर्णतः एक अभिशाप है या एक वरदान। यदि परिणामों में कुछ विद्यार्थियों का प्राप्तांक उच्च (26–30 की श्रेणी में) आता है, तो यह सिद्ध होगा कि सोशल मीडिया का शिक्षाप्रद उपयोग विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि कर रहा है। जब विद्यार्थी यूट्यूब ट्यूटोरियल्स देखने, व्हाट्सएप पर शिक्षकों और सहपाठियों के साथ शैक्षिक नोट्स साझा करने, या ई-लर्निंग समूहों में भाग लेने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं, तो यह उनके सहयोगी अधिगम और अकादमिक प्रदर्शन को समृद्ध करता है (हजरा और कांत, 2024, पृ. 12)। निष्कर्ष इस बात पर जोर देगा कि प्रौद्योगिकी या सोशल मीडिया अपने आप में कोई बाधा नहीं है, समस्या इसका अनियंत्रित, उद्देश्यहीन और समस्याग्रस्त उपयोग है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1 अजीजी, एस. एम., सोरोश, ए., एवं खातोनी, ए. (2019). रिलेशनशिप बिटवीन सोशल नेटवर्किंग एडिक्शन एंड एकेडमिक परफॉरमेंस. ईरानियन जर्नल ऑफ साइकिएट्री, 14(2), 146–155।
- 2 एसेरयेल, डी., एवं अन्य (2021). द इम्पैक्ट ऑफ सोशल मीडिया डिस्ट्रैक्शन ऑन एकेडमिक परफॉरमेंस. जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 14(1), 45–60।
- 3 किर्सचनर, पी. ए., एवं कार्पिस्की, ए. सी. (2010). फेसबुक एंड एकेडमिक परफॉरमेंस. कंप्यूटर्स इन ह्यूमन बिहेवियर, 26(6), 1237–1245।
- 4 नी, एन. एच. (2001). सोशिएबिलिटी, इंटरपर्सनल रिलेशंस, एंड द इंटरनेट: रिकंसीलिंग कॉम्प्लिकेटिंग फाइंडिंग्स. अमेरिकन बिहेवियरल साइंटिस्ट, 45(3), 420–435।
- 5 प्रसाद, पी. आर. (2022). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर सोशल मीडिया का प्रभाव. अपनी माटी, (अंक 85)।
- 6 राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय. (2020). भारत में शिक्षा: एनएसएस 75वाँ दौर. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार।
- 7 शर्मा, एवं शर्मा (2022). द इम्पैक्ट ऑफ सोशल मीडिया ऑन एकेडमिक अचीवमेंट इन द पोस्ट-कोविड एरा।
- 8 शाहनवाज, एम. जी., एवं रहमान, यू. (2020). सोशल नेटवर्किंग एडिक्शन स्केल. अप्लाइड साइकोलॉजी, 1–15।
- 9 स्वेलेर, जे. (1988). कॉग्निटिव लोड ड्यूरिंग प्रॉब्लम सॉल्विंग: इफेक्ट्स ऑन लर्निंग. कॉग्निटिव साइंस, 12(2), 257–285।
- 10 हजरा, एवं कांत (2024). सोशल मीडिया एंड एजुकेशनल आउटकम्स।
- 11 यूसुफ, एवं अदिगुन (2020). एकेडमिक परफॉरमेंस एंड एजुकेशनल इफेक्टिवनेस।